देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
UGC Valid Journal
(The Gazette of India, Extraordinary
Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Impact Factor
3.811

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजा शिवछत्रपति कला व वाणिज्य महाविद्यालय महागांव, महाराष्ट्र
हिन्दी विभाग अंतर्राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी विशेषांक नवम्बर 2021
हिन्दी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर

डॉ. सुगंधा घरपणकर
विशेषांक सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

# बोहल शोध मञ्जूषा

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. ISSUE- (सेमिनार विशेषांक) ISSN : 2395-7115

*प्रेरणा :*

**चौ. एम. सिहाग**

*विशेषांक सम्पादक :*

**डॉ. सुगन्धा घरपणकर**

हिंदी विभागाध्यक्ष, राजा छत्रपती महाविद्यालय, महागाँव, महाराष्ट्र

*सम्पादक :*

**डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट**

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
**विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक**
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रकाशक :

**गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)**

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | शुभकामना संदेश | डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख | 9-9 |
| 2. | शुभकामना संदेश | सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' | 10-10 |
| 3. | सम्पादकीय | डॉ. सुगन्धा घरपणकर | 11-11 |
| 4. | हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर | डॉ. लता पाटील | 12-13 |
| 5. | प्रयोजनमूलक हिंदी और रोजगार अर्जन : पत्रकारिता के संदर्भ में | प्रा. डॉ. हिंदुराव घरपणकर | 14-17 |
| 6. | अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता को रोजगार के अवसर | डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत | 18-21 |
| 7. | हिन्दी भाषा में रोजगार के अवसर | डॉ. नरेश कुमार सिहाग | 22-23 |
| 8. | हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर | डॉ. श्रीकांत बी. संगम | 24-28 |
| 9. | रोजगार की भाषा-हिन्दी | राठोड राधा आत्माराम | 29-33 |
| 10. | हिंदी में रोजगार का क्षेत्र : दृश्य-श्राव्य माध्यम | प्रा.डॉ. नेहा अनिल देसाई | 34-36 |
| 11. | इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में रोजगार के अवसर | प्रा. हसीना अ. मालदार | 37-40 |
| 12. | हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर | प्रा. वाय.पी.पाटील | 41-44 |
| 13. | हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर | गातवे युवराज शामराव | 45-47 |
| 14. | राष्ट्रभाषा हिंदी में रोजगार के अवसर | सौ. रोहिणी गुरूलिंग खंदार | 48-51 |
| 15. | हिंदी में रोजगार के अवसर | प्रा. ललिता भाउसाहेब घोडके | 52-56 |
| 16. | हिन्दी विषय में कैरियर और रोजगार की संभावनाएं | डॉ. अनुसुइया अग्रवाल | 57-60 |
| 17. | हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर | कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार | 61-64 |
| 18. | हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर | प्रा.डॉ.-गडाख दिपाश्री कैलास | 65-68 |
| 19. | हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएं | डॉ. सी.एल. महावर | 69-72 |
| 20. | हिंदी भाषा-जीविकोपार्जन के अवसर एवं संभावनाएं | आरती शर्मा | 73-77 |
| 21. | हिंदी भाषा तथा रोजगार | सुश्री स्वाति हिराजी देड | 78-81 |
| 22. | हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर | डॉ. भारती बाळकृष्ण धोंगड | 82-85 |
| 23. | सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी : रोजगार के अवसर | श्री.निलेश सुरेशचंद्र पाटील | 86-88 |
| 24. | हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर | प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील | 89-90 |
| 25. | हिंदी के अध्यताओं को रोजगार के अवसर | डॉ. एम.एस. पाटील | 91-95 |
| 26. | हिंदी अध्ययेता को रोजगार के अवसर | अनल रोडूअहरे, डॉ. अशोक मराठ | 96-100 |
| 27. | हिंदी और रोजगार की संभावनाएँ | डा. संदीप पांडुरिंग शिंदे | 101-103 |
| 28. | हिंदी के अध्यायता को रोजगार के अनेकानेक शुभ अवसर | डॉ अंजना अप्पासाहेब कमलाकर | 104-107 |
| 29. | रोजगार की भाषा हिन्दी | डॉ. संजय बजरंग देसाई | 108-110 |
| 30. | हिंदी में रोजगार की संभावनाएं | डॉ. रूपाली दिलीप चौधरी | 111-115 |

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 18-21
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता को रोजगार के अवसर

**-डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत**
सहायक प्राध्यापक, कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म.सोनवणे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय सटाणा, ता. बागलाण जि. नासिक।

विश्व में हर जीव अपनी शारीरिक जरुरतें पूर्ण करने हेतु उसे भोजन की आवश्यकता होती है। जिसके द्वारा वह अपने शरीर को पृष्ट एवं मजबूत बनाता है। इन जीवों में सबसे बुद्धिवान प्राणी मनुष्य माना जाता है। मनुष्य के लिए रोटी, कपड़ा और मकान यह आवश्यक है, इसकी पुर्ति के लिए वह नौकरी तथा व्यापार, उद्योग एवं कुछ ना कुछ करता है, अर्थात् उसे रोजगार की आवश्यकता होती है।

हम हिंदी भाषा के कारण हिंदी अध्ययता के लिए रोजगार के अवसरों पर विचार–विनिमय करने वाले है। सबसे पहले हिंदी भाषा के संदर्भ में जानकारी आवश्यक है। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत है। हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रभाषा है। हमें राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रभाषा पर गर्व होना चाहिए। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी के कारण ही सारे राज्य एक सुत्र में पिरोकर भारत देश का निर्माण हुआ है। आज यह एक संघ राष्ट्र के रुप में अवतारित है। भारत देश अलग–अलग राज्य, विभिन्न भाषा, बोली, संस्कृति का देश है फिर भी हिंदी भाषा के कारण एकता में बँधा है, यह कहना अनुचित नहीं होगा। आपस में विचारों का आदान–प्रदान, व्यापार, संस्कृति की जानकारी यह केवल हिंदी भाषा ही परिणाम है।

हिंदी भाषा को बोलनेवाले तथा जानने वाले केवल भारत देश में ही नहीं तो सारे विश्व में विद्यमान है भारत में हिंदी भाषा कों बोलनेवालों की संख्या अधिक है, "हिंदी देश की ऐसी भाषा है जो देश के अधिकत्तर हिस्सों में बोली और समझी जाती है। यह देश को जोड़ने काम करती है।"[1] ज्ञानी जैल सिंह इनका यह कथन है, अर्थात हिंदी सबको एक सुत्र में लाने का कार्य करती है।

१९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ और १४ सितम्बर १९४९ को स्वाधीन भारत के संविधान में हमारे राष्ट्रीय नेताओं का सपना साकार हुआ। हिंदी संघ की राजभाषा और देवनागरी लिपि राजलिपि स्वीकृत की गई।

१४ सितम्बर १९४९ को हिंदी भाषा को राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ और देवनागरी लिपि का प्रयोग होना यह निर्णय लिया गया। विश्वभर में हिंदी का बोलबाला हो रहा है। हिंदी भाषा लगातार लोकप्रिय हो रही है विभिन्न देशों में भी हिंदी लोकप्रिय बन रही है। हिंदी भाषा का क्षेत्र भी दिन प्रतिदिन विशालतम बनता जा रहा है। हिंदी अध्ययताओं के लिए रोजगार के अवसर भी अनंत है। वहाँ तक हमारी पहुँच भी होनी चाहिए।

**हिंदी भाषा अध्ययता के लिए रोजगार के क्षेत्र :-**

विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 60 करोड़ से अधिक है और हिंदी समझने वालों की संख्या

लगभग एक अरब से भी ज्यादा है। सबको रोजगार की आवश्यकता है। हिंदी के कारण निम्नवत् क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त हो सकते है। शिक्षा/अध्यपन क्षेत्र–पत्रकारिता के क्षेत्र, रेडियों जॉकी और समाचार वाचक, हिंदी में सृजनात्मक साहित्य, पर्यटन, फिल्म, शासन, सरकारी दफ्तरों में, पुलिस विभाग, डाक क्षेत्र, जीवन बीमा, साहित्य क्षेत्र, गीतकार, संगित क्षेत्र, दूरदर्शन, संवाददाता, रेल का क्षेत्र, हवाई जहाज, बैंक, भारतीय सेना, नौसेना, वायुसेना, नाटक, व्यापार, औद्योगिक क्षेत्र, संगणक, दूरसंचार हिंदी भाषिक, मार्गदर्शक अनुवादक आदि अनंत क्षेत्र रोजगार के लिए उपलब्ध है। अलग–अलग क्षेत्रों में अलग पदों के लिए (जिस नौकरी के लिए) आवेदन करते है वहाँ उसके अनुसार शैक्षणिक अर्हता होना आवश्यक है। हम अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता के लिए प्राप्त रोजगार पर दृष्टि डालेंगे। इससे पूर्व अनुवाद का अर्थ, अनुवाद की परिभाषा जानना आवश्यक है।

**अनुवाद का अर्थ :-**

'अनुवाद' यह शब्द 'अनु+वाद' दो शब्दों सें मिलकर बना है 'अनु' का अर्थ बाद में अथवा पश्चात और 'वाद' का शब्द संस्कृत के वेद् धातु से बना है। जिसका अर्थ 'बोलना' या कहना अर्थात कही गई बात को पुनः कहना अनुवाद है"।[२]

अनुवाद के अर्थ को संक्षिप्त शब्द सागर हिंदी शब्द भंडार कें इस प्रकार बताया है। "अनुवाद–उत्था/तर्जुमा, पुनरुक्ति, फिर कहना, दोहराना, वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन।"[३]

नालंदा विशाल शब्द सागर में भी यही अर्थ प्राप्त होता है– "भाषांतर/उत्था, तर्जुमा, पुनरुक्ति, अध्ययन पुनःरुलेख, मिमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय का दूसरे शब्दों में दोहराणा।"[४] अर्थात् अनुवाद का अर्थ किसी प्राप्त आलेख/सामग्री आशय का दुसरे शब्दों में भाषा में दोहराना है।

अनुवाद की परिभाषा :– अनेक विद्ववानों ने दी हुई हे उनमें सें कुछ १) भोलानाथ तिवारी – "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है, और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग इस प्रकार अनुवाद 'निकटतम' समतल्य और सहज प्रति प्रतीकन है"।[५]

अवधेश मोहन गुप्त – "अनुवाद स्त्रोत के पाठ के –कथन और कथ्य की लक्ष्य भाषा में सहज एवं समतुल्य अभिव्यक्ति है।

पट्टनायक – "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसक द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण संदेश या संदेश का अर्थ) को एक भाषा समुदाय से दूसरी भाषा समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।"[७]

तात्पर्य एक भाषा में कहे गये अथवा लिखे गये आशय/सामग्री को दूसरी भाषा में उसी भावबोध से रुपांतरित करना हिंदी भाषा के कारण अनुवाद के अनंत क्षेत्र अध्ययता के लिए रोजगार के रुप में उपलब्ध है, उनमें कुछ का निम्न वर्णन किया है।

**बैंक का क्षेत्र :-**

आज वैश्वीकरण के कारण सभी क्षेत्र अपना विकास कर रहे है। मानव के विकास के साथ हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार के क्षेत्र भी विकसित हुए है। "सन १९६९ में १४ प्रमुख वाणिज्यक बैंक एवं तद्पश्चात १९८० में अन्य वाणिज्यक बैंको के राष्ट्रीकरण के फलस्वरुप बैंकों पर अधिनियम, नियम एवं वार्षिक कार्यक्रम लागू हो गए। राष्ट्रीय करण के कारण बैंकिग ढांचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए है। अतः कारोबारी विकास एवं संविधिक

उपबंधों को पूरा करने हेतु बैकों के लिए आवश्यक हो गया कि वे हिंदी में कार्य करें। मूल बैकिंग नियम में भी जारी/प्रकाशित करना अनिवार्य है।"[८]

**तात्पर्य :-**

बैकों में अनुवाद के रुप में हिंदी अध्ययता को अनुवाद के रुप में रोजगार प्राप्त है। शुरु में ही बैंको का कामकाज अंग्रेजी में था। उसमें पत्र व्यवहार, लेखन, फार्म, दस्तावेज, नियम, विनिमन। सभी में अंग्रेजी का प्रयोग था पश्चात राजभाषा अधिनियम के कारण उसें हिंदी भाषा में अनुवादित करना आवश्यक है। अतः बैंक के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता को रोजगार प्राप्त है।

**सरकारी विभाग :-**

सरकार के लगभग सभी विभागों में अनुवादक की जरुरत होती है। जो सरकारी दस्तावेज हैं उनका अनुवाद करते है। भारत में राजभाषा अधिनियम के अनुसार सभी सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी और हिंदी भाषा में होना अनिवार्य है। साथ ही साथ राज्य सरकारों में क्षेत्रीय भाषाओं को भी मान्यता दी जाती है। इन सभी दस्तावेजों के अनुवाद के लिए अनुवादक की जरुरत होती है। विधानसभा में इंटरप्रेटर का पद होता है। जिसका काम भाषण दे रहे नेता की बातों को साथ–साथ अनुवाद करना होता है। सरकार द्वारा चल रहें मिडिया हाऊस, दूरदर्शन और आकाशवाणी में अनुवादक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वाणिज्य क्षेत्रों से जुडी सभी नीतियों और नियमों का अनुवाद करते है। विधि क्षेत्र न्यायालयों मे भी अनुवादक की आवश्यकता होती है आदि अनेंक सरकारी विभागों में हिंदी अध्ययताओं कों रोजगार के अवसर प्राप्त है।

**विज्ञापन उद्योग :-**

आज हम सभी जगह पर वैश्वीकरण के कारण अपनी चीज एवं अपने उत्पादन को सामान्य से सामान्य जन तक पहुंचने हेतू अपने उत्पादन का वस्तु का महत्व समझाने के लिए विज्ञापनों में प्रतियोगिता चल रही है। और हर व्यक्ति को विज्ञापन के द्वारा विभिन्न भाषाओं में तथा हिंदी भाषा में विज्ञापन प्रस्तुत किए जाते है चाहे वह फलक लेखन द्वारा दूरदर्शन, टीवी, रेडियो, समाचार पत्र आदि अनेक माध्यमों से प्रस्तुत होता है। हिंदी अनुवादक के लिए यह रोजगार प्राप्ति के लिए विशाल क्षेत्र है।

**समाचार मिडीया :-**

आज समाचार मीडिया अनुवाद के बिना अधुरा है। टी.वी, समाचार पत्र, मासिक, पत्रिका, भ्रमरध्वनी, संगणक आदि देश–विदेश की खबरों को अपने लोगों तक पहुँचाने हेतू एक अनुवादक की भुमिका महत्वपूर्ण होती है। मिडिया एवं समाचार पत्रों में पत्रकारिता की उपाधि अनिवार्य होती है। जिसके पास यह उपाधि है उसे रोजगार के द्वारा अपने आप खुल जाते है। संवाददाता के रुप में कई ऐसी न्युज कंपनियाँ है। जहाँ अनुवादक के रूप में रोजगार के अवसर प्राप्त है।

**प्रकाशन घर :-**

सामान्यत्तर किसी एक भाषा में अपना साहित्य सृजन करता है और उसे किताब को दूसरी भाषा में विभिन्न भाषिक लोगों तक पहुँचाने के लिए प्रकाशक अनुवादक का सहारा लेकर दूसरी भाषाओं में अनुवाद है यहाँ अनुवाद के रुप में हिंदी अध्ययता को रोजगार प्राप्त होता है। कई ऐसे अंग्रेजी साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ है। आज तक अनेक कहानी, गीत, कविताएँ एवं साहित्य की अन्य विधाओ का अनुवाद हो रहा है। अंग्रेजी

भाषा के प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद विश्व की प्रमुख भाषाओं में प्राप्त है।

**वैज्ञानिक साहित्य :-**

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत सामाजिक एवं भौतिक दोनों प्रकार के विषय आते है। इनमें मनोविज्ञा, व्यवहार विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, पर्यावरण विज्ञापन, भौतिक विज्ञापन आदि विषयों का अनुवाद की दृष्टि में शामिल किया जा सकता है।

**व्यापारी जगत :-**

व्यापार और व्यवसाय करने हेतु भारत एक बड़ा बाजार है। बाजार की भाषा हिंदी है। इसलिए विदेशी कंपनियाँ अपने वस्तुओं की बिक्री के लिए हिंदी को अपनाए है। वे अपनी सामग्री–चीजों का विज्ञापन हिंदी में ही देते है जिससे आम जनता तक अपनी सामग्री पहुँचाते है। इस पर एक कहावत है। "उपभोक्ता अपनी भाषा में खरीदता है किंतु व्यापारी ग्राहक की भाषा में ही बेच सकता है।"[६] विदेशी कंपनी के व्यवसायिक व्यापारी व्यापार करने हेतू आते है जो उन्हें तथा सभी कंपनी में काम करने वाले लोंगो के लिए हिंदी आवश्यक होती है। हिंदी के कारण रोजगार उपलब्ध होते है।

**सिनेमा उद्योग :-**

सिनेमा के जगत में आज कल रिमेक्स का बहुत बोल बाला है। कई गीत, कहानियाँ, फिल्में डबिंग के रुप में आ रही है। यह ऐसा रुप है कि कई अंग्रेजी फिल्म हिंदी में अनुवादित कर के दिखायी जाती है। इस सिनेमा के क्षेत्र में संवाद, कहानी, गीत, तथा अन्य कई साधन है। जिसे हिंदी में एवं अन्य भाषाओं में अनुवादित किया जाता है अर्थात फिल्म जगत में भी। हिंदी अध्ययता को रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते है।

**निष्कर्ष :-**

हिंदी अध्ययता के लिए दुनिया में अनुवादक के रुप में अनंत ऐसे क्षेत्र है जिसमें रोजगार की संभावनाएँ प्राप्त है। केवल उसके लिए उसके पास अनुवाद की दृष्टि से हिंदी के साथ अन्य भाषा की जानकारी होना आवश्यक है। अनुवादक के पास यदि साहित्य स्नातकोत्तर की उपाधि हो तो एक अनुवादक के रुप में उसकी योग्यता में वृद्धि होती है और वह अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। अनुवादक के क्षेत्र में बढ़ते अवसरों के देखते हुए कई विश्वविद्यालयों में एक साल का डिप्लोमा कोर्स उपाधि वर्ग प्रारंभ किया है तथा साहित्य में स्नातक के लिए पाठयक्रम में भी अनुवाद को निर्धारित किया गया है। विश्व में हिंदी अध्ययता के लिए अनुवाद के क्षेत्र में अनंत रोजगार के क्षेत्र उपलब्ध है। हिंदी के बिना विश्व गूँगा है। जय हो हिंदी की, जय हो हिंदुस्थान की।

**संदर्भ :-**


1. प्रयोग मूलक हिंदी अधूनातन आयाम – डॉ. अंबादास देशमुख, पृ. ३५
2. वही– पृ. ४३
3. अनुवाद का स्वरुप और आयाम – डॉ. त्रिभुवनराय, पृ. ८६
4. संक्षिप्त शब्द सागर – हिंदी शब्द भंडार– नागरी प्रचारिणि सभा, काशी, पृ. ४३
5. नालंदा विश्व शब्द सागर – श्री नवलजी – पृ. ५६
6. साहित्य सौरभ–हिंदी अध्ययन मंडल, सा.कु.पुणे विश्वविद्यालय पुणे।
7. वहीं– पृ.१६५
8. अनुवाद का स्वरुप और आयाम – डॉ. त्रिभुवनराय, पृ. ८७



ई.मेल – panditdd@rediffmail.com, भ्रमरध्वनी– 9503298246

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2021, Special Issue

## अतिथि संपादक

डॉ. प्रकाश शिंदे

डॉ. मुखत्यार शेख

डॉ. नागनाथ वारले

डॉ. गोविंद शिवशेट्टे

डॉ. अनिलकुमार राठोड

डॉ. भगवान कदम

प्रा. राकेश वैद्य

डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**."

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13) रवीन्द्रनाथ टैगोर: विश्वविख्यात सृष्टा
**डा०शीनू, बुलन्दशहर** ||58

14) एकलव्य
**डॉ. सुनिता मोटे, अहमदनगर** ||62

15) दलित साहित्य का उद्भव–विकास
**डॉ. बेठियार सिंह साहू, छपरा, बिहार** ||65

16) संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' का अध्ययन
**डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत, जि.नाशिक** ||69

17) जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति
**डॉ. यशोदा मेहरा, कोटा** ||75

18) मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युगबोध
**प्रा.हिरा पोटकुले, गढी** ||78

19) लैंगिक असमानता एवं सामाजिक सरोकार
**डॉ. लक्ष्मण लाल सरगड़ा, बांसवाड़ा (राज.)** ||81

20) राग दरबारी उपन्यास में निहित व्यंग्यात्मकता
**मुकेश चौहान, कामरूप, (असम)** ||84

21) महान देशभक्त 'कस्तूरबा गांधी'
**पूजा काशीनाथ मुढ्ठे, औरंगाबाद, महाराष्ट्र** ||89

22) कथा साहित्य के अंतर्गत रेणु के कथेतर रचना कौशल का प्रबंधन
**डॉ. राजेश कुमार मिश्र, श्री मुक्तसर साहिब (पंजाब)** ||93

23) शोध में अलख
**रोहितेश आमलिया, बांसवाडा (राज.)** ||97

24) साठोत्तर महिला उपन्यास लेखन में नारी विद्रोह के स्वर : एक चिन्तन
**डॉ. संतोष कुमार अहिरवार, सागर (म०प्र०)** ||100

25) 'गोदान' में वर्णित सामाजिक समस्याएँ
**सौरभ सराफ & डॉ. अर्चना झा, भिलाई** ||104

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

आदि अनेक समर्थ हस्ताक्षर अस्तित्व में आए जिनकी उपस्थिति में दलित साहित्य का द्रुत गति से विकास हुआ है। इधर हिन्दी पट्टी में दलित साहित्य का प्रादुर्भाव १९६०—७० के आसपास दिखाई पड़ता है। डॉ. अम्बेडकर के समग्र सामाजिक राजनीतिक, साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व ने दलित साहित्य के उद्भव के लिए आधार भूमि की भूमिका निभाई। यहीं से हिन्दी दलित साहित्य में मोहन दास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, कंवल भारती, श्यौराज सिंह बेचैन, सूरजपाल चौहान, डॉ. डी. आर. जाटव, जयप्रकाष कर्दम, डॉ. धर्मवीर, माता प्रसाद, तुलसी राम, लक्ष्मीनारायण सुधाकर, कौसल्या बैसन्त्री, डॉ. हेमलता महिश्वर, अजय नावरिया आदि अनेक रचनाकारों का उदय हुआ जिनकी ऊर्जावान लेखनियों से दलित साहित्य समृद्ध हुआ है और निरंतर विकास की ओर अग्रसर है।

**संदर्भ—सूची**


१. ओमप्रकाश वाल्मीकि : दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. ५३

२. कंवल भारती : दलित विमर्श की भूमिका, पृ. ११२—११३

३. वही, पृ. ११५

४. कंवल भारती : दलित विमर्श की भूमिका, पृ. १२१

५. शरण कुमार लिंबाले : दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. १२

६. शरण कुमार लिंबाले : दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. १४

७. वही, पृ. ३८

८. शरण कुमार लिंबाले : दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. ६०


**16**

# संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' का अध्ययन


**डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत**

सहायक प्राध्यापक,

कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म.सोनवणे कला,

वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय सटाणा,

ता.बागलाण, जि.नाशिक


किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करते समय पहले उसके व्यक्तित्व को जानना आवश्यक होता है क्योंकि साहित्यकार जो भी साहित्य सृजन करता है उसपर उसके सामाजिक एवं वैचारीक प्रवृत्ति का प्रभाव रहता है।

हिमाचल प्रदेश के धौलदार भूमि की पुत्रवधू एवं पंचनदियों के मेल से सुजलाम सुफलाम एवं गुरुनानक जी की पुण्य पावन स्थल की पुत्री हिंदी साहित्यकार संतोष शैलेज जन्म १४ अप्रैल १९३७ अमृतसर (पंजाब) मे हुआ उनकी शिक्षा एम. ए बी.एड तक पूर्ण हुई। राजकिय उच्च विद्यालय दिल्ली में अध्यपक के तौर पर सेवाएँ देना शुरू किया। इसी समय उनका विवाह १९६४ में शांताकुमार के साथ हुआ (जो आगे चलकर हिमाचर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे है) पश्चात लेखिका हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में आ गयी। उन्हें तीन पुत्रियाँ और एक पुत्र है। उन्होंने अपना लेखन—पठन कार्य निरंतर जारी रखा। उन्होंने हिंदी के उपन्यास, कहानी, कविता,

आलेख, निबंध, आदि विधाओ लेखन कार्य किया हुआ है। 'दीपशिखा' यह संतोष शैलजा द्वारा लिखित निबंध संग्रह है इस निबंध संग्रह में कुल ३० निबंध संग्रहित है। इनमें सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, पर्यावरण संबधी विषयों पर चिंतन किया हुआ द्रष्टव्य होता है।

**दीपशिखा में दार्शनिकता –**

संतोष शैलला ने 'आनंद कहाँ' इसनिबंध में सभी जीव ब्रह्म के अंश है। इसबात को स्पष्ट करते हुए प्राकृतिक सौंदर्य और श्याम का चित्रण किया हुआ है। संसार की नश्वरता का वर्णन किया है। मृत्यू की कल्पना भी मनुष्य को भयभीत करती है। वास्तव में मृत्यु ब्रह्म से मिलन है अंश का अंशी से मिलन है। इस बात की पुष्टी के लिए स्वामी विवेकानंद, भगवान गौतम बौध्द, संत कबीर, आदि के विचारों का उदाहरण दिया है। जैसे सदा याद रखो कि तुम संयोग से अमरिकन हो संयोग से ही स्त्री हो। वास्तव में तुम ईश्वर की पुत्री हो दीन रात अपने से कहा करो– मै ईश्वर का अंश हूँ, इस सत्य को कभी न भूलो।१

यहा स्वामी विवेकानंद ने अपनी शिष्य जोस्फीन मैक्ल योड को उपदेश करते हुए यह कथन किया हुआ है। जिसमें आत्मा– परमात्मा का संबंध बतलाता है।

महात्मा कबीर का कथन स्पष्ट करते हुए संतोष शैलजाने स्पष्ट किया है।–

प्रेम गली अति साँकरी,तामें दो ना समाहिं२ इसी तरह स्वामी विवेकानंद का कथन है।

अमृत पुत्रो । आप ईश्वर की संतान है। अमर के भागीदार है– पवित्र एवं पुर्ण आत्मा है।३

सभी ईश्वर के अंश एवं पुत्र है इस बात को स्पष्ट किया है। इसी से बन इसी में समाना है। इसबात को लेखिकाने अपने निबंध संग्रह में संग्रहित निबंध 'जिसे विवेकानंद परमहंस मिशन की लेडी मिशनरी कहते थे'

'आनंद कहाँ' आदि में वर्णन किया है। भगवान गौतम बौध्द के शब्दो में मानव को अपने साक्षात्कार से आत्मज्ञान की ज्योति जलानी चाहिए यह कथन। अप्पो दीपो भव:४ इसी प्रकार आत्मा–परमात्मा संबंध बताते हुए ब्रह्म से सब बने ब्रह्म में समाते है दुनिया की नश्वरता का स्पष्ट करते हुए। अंधविश्वास से हमें बचना चाहिए यह संदेश संतोष शैलजा द्वारा सब होता है। यहा उनके निबंध 'दीपशिखा' में दार्शनिकता द्रष्टव्य होती है।

ऐतीहासीक तत्व– संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' में कई ऐसे निबंध है जिससे ऐतिहासिक घटना एवं स्थानो का चित्रण किया हुआ है।स्वामी विवेकानंद के जीवन, शिमला शहर की ऐतिहासिक कहानी, मार्गरिट(भगिनी निवेदीता) की कहानी जयप्रकाश नारायण, मणि कर्ण का स्थान आदि अनेक बातों का घटीत चित्रण प्राप्त होता है। यहा १८१६ की बात जब गुरखा युध्द के एक लेफ्टिनेंट रोज ने घने देवदारु व पहाडियों में छिपे 'श्यामला' नामक इस गाँव को खोज लिया... 'श्यामला' नाम जो कि गाँव की कुलदेवी 'श्यामला' के नामपर रखा था, वह अंग्रेजी में 'शिमला' के नाम से विभूषित होने लगा।५

इस तरह 'दीपशिखा' में 'यह शिमला है या श्यामला? नामक निबंध में शिमला के ऐतिहासिक कहानी का चित्रण 'विश्व रंगमंच पर एक अद्वितीय सन्यासी' में स्वामी विवेकानंद जो ब्रह्म/मोक्ष की खोज में निकलना, रामकृष्ण परमहंस से मिलना

शिकागो (अमरिका) में होने वाली विश्व धर्म परिषद में भाग लेना खेतडी के महाराज से मुलाकात, अमरिका का भाषण और अपने धर्म का प्रचार प्रसार आदि का चित्रण प्राप्त होता है। अमरिकावासी बहनों एवं भाइयों६

स्वामी विवेकानंद के इन्ही वचन के साथ सभी चकीत हो गये स्वामीजी ने विश्वबंधुता का हमारी भारतीय संस्कृति, हिंदू धर्म का परिचय दिया। स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित होकर भगिनी निवेदिताने अपना संपूर्ण जीवन हिदुस्तानी संस्था के लिए लगा धदिया। आदि अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण 'दीपशिखा' में संतोष शैलजा द्वारा किया हुआ द्रष्टव्य होता है।

**धार्मिक एवं सांस्कृतिक चित्रण–**

संतोष शैलजा ने 'दीपशिखा' में करवाचौथ, जन्मदिन, वेशभुषा, बच्चो का नामकरण, देवदासी, त्यौहार, भगवान की पूजा, मंदीर आदि अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का चित्रण किया हुआ है।

एक में राधाकृष्ण की मुर्तियाँ सजी थी, दूसरे में सीताराम एवं पवनसुत हनुमान की एवं तीसरे में शिव–पार्वती, गणेशजी विराजमान थे। जगदंबा माँ दुर्गा की मुर्ति भी थी।७

यह भगवान की मुर्तियों की पूजा की चित्रण है। करवाचौथ का गीत यह एक परंपर है करवाचौथ पर औरते गीत गाती है।–

लै सर्व सुहागन कार्बरा लै इच्छावंती कर्बरा –लै/ कत्ती ना अटरी ना घुम चरखडा फेरी ना वान पैर पाई ना सुतडा जबंदा झाली पाख।८ 'दीपशिखा' 'जन्मदिन या बर्थडे' में जन्मदिन के अवसरपर निभाई जानेवाली रस्म का चित्रण प्राप्त है। माँ ने बाहर आँगन– दहेरी और पुजा के कमरे में जमीन के साफ स्थानपर अल्पना के बेलबूटे बनाए, पूजा की थाली, थाली में फुल, पान भिगोए हुए चने, चावल, रोली और जल से भरी गड़बी रख दी।९

चिरंजीव मुकुल का शुभ जन्मदिन इसके साथ सुर्य,चंद्र ओम रोली से बनाकर। फिर गणेशजी की मुर्ति रखकर मुकुल द्वारा माँ ने फुल अक्षद रोली आदि सबकुछ अर्पित किया, फिर सबने गायत्री मंत्र गाया और कुछ अन्य ईश्वर की प्रार्थना भी गाई। एक थाली में थोडा घी, शहद, दूध, दही एवं हलवा कटोरियों में रखा था। एक तरफ छोटी नौ थैलियों में चावल, गेहूँ, दालें आदि रखी थी।१०

इससे स्पष्ट होते है कि संतोष शैलजा के निबंधो में सांस्कृतिक एंव धार्मिक चित्रण किया हुआ है।

**पर्यावरण एवं प्रकृति चित्रण–**

संतोष शैलजा धौलधार की भूमि हिमाचल एवं पंजाब में रहनेवाली होने के कारण उनके साहित्य में प्रकृति/पर्यावरण चित्रण का आना स्वाभाविक है। किसी भी जीव के लिए हवा, पानी, धूप, अग्नि, धरती, पहाड़, जंगल, वर्षा, आसमान आदि आवश्यक है। लेखिकाने पर्यावरण संरक्षण क्यों जरुरी है इसपर विचार अभिव्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है की– पानी में तेजाब धुला है या माटी जहरीली है,या मौसम के थे मिजाज में, आई कुछ तबदीली है। माली ने तो देख परखकर बोया था इन्सान मगर,कोंपल नागफनी की निकली, कैसी अजब पहेली है।११

पर्यावरण की सुरक्षा से हमारे आनेवाली नई पीड़ी के लिए जीवनदान है किंतु स्वार्थी मनुष्य इस बात को भूल गया है। इसपर दृष्टि डालते हुए

उन्होंने भूतपुर्व दिल्ली शहर और वर्तमान के दिल्ली शहर का स्वरुप किस प्रकार का था और कैसा हो गया है इसका चित्रण घकिया है। जिस प्रकृति ने जीवन दिया उसी को नाम हम नष्ट कर रहे है। वो घर में मेरे आग लगाने को आए है, मै जिनके चिरागों में खून बनके जला हूँ।१२ इसीतरह प्रकृति का चित्रण करते हुए पहाड़ों का, नदी का, सरसराती हवा का, कान की मणि जहाँ गरम पानी के तालाब है उसका चित्रण शैलजाने अपने निबंधों में किया हुआ द्रष्टव्य होता है। अत: स्पष्ट हे कि संतोष शैलजा के साहित्य में प्रकृति चित्रण एवं पर्यावरण चित्रित है।

**नारी विषयक–**

संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' में नारी के अनेक रूपों का चित्रण किया गया है– पतिव्रता नारी, समर्पन करनेवाली, संघर्षमय स्त्री,आधुनिकता एवं पुरानी भारतीय परंपरा पालन करनेवाली आदि अनेक रुप 'दीपशिखा' निबंध में द्रष्टव्य होते है।

**पतीव्रता नारी–**

लेखिका अपने पति के साथ न्यूयॉर्क में गयी थी उस समय करवाचौथ का व्रत रखती है यह व्रत सुहागन घ्महिलाएँ अपने पति की लम्बी आयु एवं मंगल कामना के लिए किया करती है। 'है अँधेरी रात परदीया जलना कब मना है'–

'यात्री आपरेशन टिंबल ट्रोल' निबंध में फँस गये तो उन्हें सेना के नौजवान बचाते है यह ३६ घण्टे के संघर्ष के बाद जब सेना अधिकारीयों ने औरतो के लिए जलपान– चाय की व्यवस्था करते है तब वह महिलाएँ इन्कार करती है क्योंकी करवा चौथ शुरू हुआ था। ३६ घंटे की भूखी प्यासी, मृत्यू आशंका से त्रस्त महिलाओं ने बडे साहस से जलपान करने से इन्कार कर दिया– अब करवाचौथ का व्रत शुरू है, हम चंद्रमा को अर्ध देने से पहने चाय–पानी पीकर अपने पति का अमंगज कैसे करे?१३ यहाँ पति के मंगलमय एवं दिर्घआयु के लिए भूखी प्यासी व्रत रखती हुई महिला पतिपरायणता का रुप है। संभावत: यह सोचकर कि स्त्री अधिक कोमल दुर्लभ होती है, किंतु भारतीय नारी संकट की घडी में अबला नहीं सबला बन जाती है तब उसे अपनी नहीं परीवार की अधिक चिंता होती है। तभी तो उस महिला ने ३६ घंटे की मृत्यू यातना के बाद भी कहा– नही, पहले मैं नहीं जाऊँगी। आप मेरे पति को ले जाए। वे मरे बच्चों की देखभाल कर सकेंगे।१४ यहाँ पतिपरायणता का रुप स्पष्ट दिखायी देता है अत: संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' में पतिपरायणता नारी का रुप चित्रित किया हुआ प्राप्त होता है।

**समर्पन करनेवाली नायिका–**

'दीपशिखा' में मार्गरिट भगिनी निवेदिता का भारत देश के लिए एवं हिंदूस्तान की संस्कृति के लिए जो जीवन समर्पन किया है उसका चित्रण प्राप्त है।

'दीपशिखा' में अंकित बलिदानी भाव तुझे मिलें, गुरू के इस मंत्र को साकार करती हूई निवेदिता उस क्षण से अपने अथक कार्य में जुट गई।१५

एक विदेशी महिलाने भारतीय संस्कार एवं हिदूस्तान की सेवा के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित घकिया– एवं भारतीय साहित्य/संस्कार के प्रति जो प्रेम था उसका घचित्रण इस तरह है– रविंद्रनाथ टैगोर का भगिनी घनिवेदिता (मार्गरिट) ने दिया हुआ जवाब सब कुछ स्पष्ट करता है– जब रविंद्रनाथ टैगोर ने अपनी बेटी उसे सौंपते हुए कहा

इसे पश्चिम ज्ञान एवं शिष्टाचार की शिक्षा दिजिए। तब निवेदिता का उग्र स्पष्ट गूँजा—कविवर! आप इसे 'मेम' क्यों बनाना चाहते है? यह एक हिंदू कन्या है। इसेभारतीय संस्कार सीखने दीजीए। उसे अंग्रेजी नहीं बंगला साहित्य पढ़ने दिजिए।१६ ऐसे ही जोस्फीन मैक्लयोड ने भी अपना योगदान दिया है वह अन्य 'वह अन्य शिष्यों जैसी भगिनी निवेदिता आदि की तरह दीक्षित न थी, न ही उसने घर या देश त्यागकर संन्यास लिया था किंतु आजीवन वह अपने ढंग से मिशन कार्य करती रही इस अदभूत कार्यकर्ती को विवेकानंद रामकृष्ण मिशन की लेडी मिशनरी पुकारते थे।१७ यहाँ विदेशी महिलाओं का भारतीय संस्कृति एवं हिदूस्तान के लिए समर्पण स्पष्ट होता है।

**संघर्षमय नारी —** नारी का जीवन संघर्षमय होता ही है। संतोष शैलजा ने 'दीपशिखा' निबंध संग्रह में संघर्ष करनेवाली नारी का चित्रण प्राप्त होता है— इसमें अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाली न्याय प्राप्त करने के लिए अंदोलन करनेवाली, जीवन को सुखमुय बनानेवाली, देवदासी, माँ बेटियाँ को चाहनेवाली, भूख से संघर्ष करनेवाली ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त होते है। 'पहाड की दुर्गा' में फिंकरी देवी वृध्द महिला है। वह पहाड़ों की बहू— बेटियाँ असे आकर पानी की समस्या बताती है। तो वह पानी की समस्या का कारण बता देते है इसपर धविचार करके पर्यावरण एवं जगल पहाड आदि को घनी पहूँचानेवाले शाषण करनेवालें के खिलाफ आंदोलन करती है। आम्मा! आजकल तो हम पानी ढोते—ढोते ही थक जाती है, 'हमारे चश्मे — बावडियाँ सूख गई है।१८ जब वह पहाड का निर्दयता से शोषन करनेवालों का पता मिलने पर उन्हें रोखने के लिए राजधानी शिमला में उच्च न्यायालय के सामने धरनेपर बैठ जाती है। मर जाऊँगी पर अपने पहाड को बचाके जाऊँगी।१९

यहा फिंकरी देवी का पर्यावरण की सुक्ष्म के लिए संघर्ष द्रष्टव्य होता है। 'कर्नाटक में एक अनोखी सुबह' में देवदासी का चित्रण प्राप्त होता है। देवदासी का भोग करते है उन्हें बच्चें भी होते हे लेकिन उन बच्चों का बाप का नाम नही होता। देवदासी शांतता संघर्ष करके चंडप्पा नामक मजदुर से विवाह करने का निर्णय लेती है एवं विवाह करती है धजिससे उसके बिना बाप के तीन पुत्रों को पिता मिल जाता है और उसे पति। इसका चित्रण प्राप्त है अब मेरे बच्चों कों अपना पिता मिल गया।२० यहाँ देवदासी शांतता का संघर्षमय जीवन द्रष्टव्य हुआ है। कौन से युग में जी रही है आज की भारतीय नारी इस निबंध में आज के भारतीय नारीपर होनेवाले आत्याचार, अन्याय, सर्वहरा उसकी कुंठीत अवस्था का चित्रण प्राप्त होता है जुन १९९५ गाँव बाखरी/राज्य बिहार/जुलेख खातू नामक विधवा स्त्री लगातार भुखमरी से विवश होकर बीस वर्षीय बेटी और छह मास के पोते को सात सौ रुपये में बेच दिया यह परिस्थिति से संघर्ष करनेवाली स्नी का रुप दिखायी देता है किंतू अंत में घर जाती है। गाँव 'भूखला' (राज्य बिहार) प्रभादेवी, जब भूखों रहनें व बच्चों को भूखा रखने से थक—हार गई तो तीनों बच्चों के साथ आग की लपटों में भस्म हो गई।

इसी तरह महिलाओंपर पुलिस द्वारा आन्याय, आत्याचार महिलांओ का वरीष्ठ अधिकारियाँ द्वारा शोषण आदि आज की भारतीय नारी की अवस्था क्या हुई है ? जिसे अन्नपुर्णा माना जाता था

इसीतरह भारतीय नारी के प्रश्नों पर संतोष शैलजा ने निर्देश किया है।

**निष्कर्ष**—संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' साहित्यशास्त्र के नियमानुसार निबंध सृजन किए है। उनकें निबंधो में सामजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, धार्मिक पर्यावरण विषयक आदि अनेक विषयोंपर तथा नीति संबंधी दर्शन शास्त्र आदि बहुआयामी विषयों को केंद्र मे रखकर सृजन किया गया है। इसके द्वारा हिंदी साहित्य के लिए अपना योगदान दिया है।

**संदर्भ—**


१) जिसे विवेकानंद परमहंस मिशन की लेडी मिशनरी कहते थे ('दीपशिखा') पृ.६६ लेखक – संतोष शैलजा

२) 'आनंद कहाँ' ('दीपशिखा') पृ.११ लेखक – संतोष शैलजा

३) वही – पृ.११ लेखक – संतोष शैलजा

४) वही – पृ. १२ लेखक – संतोष शैलजा

५) यह शिमला है या श्यामला? ('दीपशिखा') पृ. २१ लेखक – संतोष शैलजा

६) विश्वरंगमंच पर एक अद्वितीय संन्यासी ('दीपशिखा') पृ.३१ लेखक – संतोष शैलजा

७) हम तो है परदेस में देस में निकला होगा चाँद ('दीपशिखा') पृ.३८ – लेखक – संतोष शैलजा

८) वही – पृ.३८ लेखक – संतोष शैलजा

९) जन्मदिन या बर्थ डे ('दीपशिखा') पृ.८४ लेखक – संतोष शैलजा

१०) वही – पृ.३८ लेखक – संतोष शैलजा

११) पर्यावरण संरक्षण क्यो ? ('दीपशिखा') पृ. १०१ लेखक – संतोष शैलजा

१२) वही– पृष्ठ .१०३ – लेखक – संतोष शैलजा

१३) है अँधेरी रात पर दीया जलाना कब मना है ('दीपशिखा') पृ.४८ – लेखक – संतोष शैलजा

१४) वही –पृष्ठ.४३ – लेखक – संतोष शैलजा

१५) 'दीपशिखा' – पृष्ठ.३३ लेखक – संतोष शैलजा

१६) 'दीपशिखा' – पृष्ठ.३४ लेखक – संतोष शैलजा

१७) जिसे विवेकानंद परमहंस मिशन को लेडी मिशनरी कहते थे।('दीपशिखा') पृ.६६ लेखक– संतोष शैलजा

१८) 'पहाड की दुर्गा'('दीपशिखा') पृ.५० लेखक – संतोष शैलजा

१९) 'कर्नाटक में एक अनोखी सुबह' पृ.६३ लेखक – संतोष शैलजा

२०) भारतीय नारी ('दीपशिखा') पृ.५४ लेखक – संतोष शैलजा


❑❑❑